20

मेरे जन्मदाता पिता शीतल प्रसादजी की टेहरी-गढ़वाल की कारा से पलायन की कथा

मेरे पिताजी शीतलप्रसादजी से संबंधित निम्नलिखित प्रसंग जिसका वर्णन मैं अब करने जा रहा हूँ, किसी उपन्यास की घटना से कम रोचक नहीं है।

सन 1940 के आसपास मेरे पिताजी की मित्रता गिरधारी नामक बनारस के एक व्यक्ति से हुई। वह बहुत ही मृदुभाषी और व्यवहारकुशल था और बड़े-बड़े लोगों से उसकी जान-पहचान भी थी। उसने मेरे पिताजी को टेहरी (गढ़वाल) में किरासन तेल से पेट्रौल बनाने का कारखाना डालने की योजना सुझाई। इसमें टिहरी के राजा और इलाहाबाद के प्रतिष्ठित वकील कन्हैयालाल मिश्र भी, जो बाद में यू. पी. के ऐडवोकेट जेनरल हो गये थे, सम्मिलित हुए। इस प्रकार गिरधारी समेत चार व्यक्तियों की इस कंपनी ने वह कारखाना खोलकर पेट्रोल बनाना प्रारंभ किया। मेरे पिताजी व्यवहार-कुशल नहीं थे परंतु किसी भी नये व्यापार की और विशेषकर इस प्रकार के साहसिक और रोमांटिक व्यापार की बात तुरत उनके गले उतर जाती थी। यह कारखाने का काम कोई बुरा भी नहीं था और प्रारंभ में थोड़ा-बहुत मुनाफा भी इसमें हुआ परंतु एकाएक द्वितीय महायुद्ध शुरू हो जाने से किरासन तेल का मिलना समाप्त हो गया और सारा काम ठप्प पड़ गया। जो रकम लगायी गयी थी, डूब गयी। कन्हैयालाल मिश्र और मेरे पिताजी ने संतोष कर लिया था। गिरधारी केवल वर्किंग पार्टनर था। उसका न तो एक पैसा लगा ही था न उसके पास लगाने को अपनी वाक्-कुशलता के अतिरिक्त और कोई रकम ही थी। परंतु टेहरी के राजा कब चुप बैठनेवाले थे! उन्होंने मेरे पिताजी को गिरधारी की मारफत टेहरी बुलवा भेजा। मैं पहले ही कह चुका हूँ कि पिताजी अत्यंत सरल स्वभाव के थे और उन्हें आसानी से ठगा जा सकता था। वे गिरधारी की बातों में आ गये और टेहरी पहुँच गये जहाँ राजा ने दोनों को अपने अतिथि-गृह में ठहरा दिया। दूसरे दिन राजा ने मेरे पिताजी से कहा 'सेठजी, राज की जितनी रकम कारखाने में लगी है वह आप अपनी गद्दी में तार भेज कर मँगवा दें। जब तक रकम नहीं आ

जाय आप आराम से हमारे अतिथि-गृह में रहे और टेहरी के प्राकृतिक दृश्यों का आनंद लें।' पिताजी समझ गये कि राजा ने उन्हें रकम आने तक एक प्रकार से बंधक कर लिया है। अतिथिशाला के बाहर चौबीसों घंटे पहरा देनेवाले दो सिपाही इसके प्रमाण थे। उन्होंने राजा को कहला भेजा कि मैंने गया तार दे दिया है और आशा करता हूँ, शीघ्र ही रुपये आ जायँगे। माँगी हुई रकम की ठीक संख्या तो मुझे याद नहीं पर वह 20-22 हजार से कम नहीं थी, जो उन दिनों के लिए खासी बड़ी रकम थी। पिताजी को गिरधारी के साथ राजा साहब की अतिथिशाला में रहते कई दिन बीत गये। गिरधारी निरंतर गया से रुपये मँगाने के लिए उन पर दबाव डाल रहा था। अंदर से वह राजासाहब से मिला हुआ था और उसने उन्हें यह आश्वासन दे रक्खा था कि पिताजी पर दबाव देने से कारखाने में लगे राज के रुपये निकल आयेंगे। यों तो सारी मशीनें वहीं राजासाहब के दखल में ही रह गयी थीं पर कुछ रुपये और वसूल करने की यह चाल शायद गिरधारी ने ही उन्हें सुझाई थी। इसमें उसका भी कुछ स्वार्थ रहा हो तो आश्चर्य नहीं।

एक दिन रात में पिताजी ने हारकर मन-ही-मन वहाँ से निकल भागने की योजना बनायी। जब गिरधारी बगल के कमरे में गहरे खर्राटे भर रहा था, वे भोर में उठे और हाथ में लोटा लेकर और कान में जनेऊ टाँगकर बाहर निकले। पहरा देनेवाले दरबान ने विनोद से कहा 'अच्छा सेठजी, आज मौसम अच्छा देखकर बाहर निपटने जाने का इरादा है क्या!' पिताजी ने कहा, 'हाँ भाई, घर में रहते-रहते तबीयत ऊब गयी है। इसी बहाने थोड़ी बाहर की सैर हो जायगी।' दरबान कई दिनों के साहचर्य से काफी हिलमिल गया था। वहाँ यह भी अफवाह थी कि सेठजी के घर से रुपये आनेवाले हैं। यह भी हो सकता है उसे सभी बातों की विशेष जानकारी न रही हो। पिताजी ने अपनी कीमती घड़ी और सारा सामान भी कमरे में ही छोड़ दिया था। जो भी हो, उसने पिताजी पर किसी प्रकार का संदेह नहीं किया और चुपचाप अपने स्थान पर बैठा रहा। पिताजी कोठी से निकल कर तेजी से चलते हुए सीधे बस स्टेशन पर पहुँचे और हरिद्वार जानेवाली बस पर जा बैठे। उन्होंने कान से जनेऊ उतार दी और गड्डमड्ड होकर बस के एक कोने में इस प्रकार स्थान ग्रहण किया कि राजासाहब का कोई जानपहिचानवाला कर्मचारी देख न सके। दिल धड़क रहा था कि शायद दरबान गिरधारी के साथ आ रहा होगा। बस के खुलने में 10-15 मिनट की देर थी जो 10-15 मिनट उन्हें 10-15 वर्ष की तरह लंबे लग रहे थे। समय हो जाने पर और ड्राइवर के आने पर भी गाड़ी के स्टार्ट होने में कोई आतुरता नहीं दिखाई

दे रही थी। 10-15 अन्य यात्री भी इसी बीच अगल-बगल में आ बैठे थे। किसी तरह रामराम करके बस चली। पर संकट तो अभी सिर पर ही था। राजा साहब के आदमी टैक्सी करके रास्ते में उतार ले सकते थे। अंग्रेजी राज के जमाने में देशी रजवाड़ों में राजा की इच्छा ही कानून थी। उसीके बल पर तो उन्होंने बिना किसी अपराध के कई दिनों तक पिताजी को अतिथिशाला में एक प्रकार से नजरबंद व र रक्खा था। वहाँ न कोई कोर्ट-कचहरी थी न कोई कानून। बस में पिताजी की बगल में एक व्यक्ति बारबार उनसे बात करने की चेष्टा कर रहा था। 'हरिद्वार में आप कहाँ जायेंगे, कहाँ ठहरेंगे, कितने दिन रुकेंगे, फिर वहाँ से कहाँ जायेंगे', इस प्रकार के प्रश्नों की उसने झड़ी लगा रक्खी थी। पिताजी समझ गये थे कि यह कोई टिहरी राज का भेदिया या जासूस है जो अजनवी समझकर उनकी पूरी जाँच कर रहा है। वे हाँ, हूँ में उसके प्रश्नों का उलटा-सीधा उत्तर देते गये। उन्होंने कहा कि मैं हरिद्वार की धर्मशाला में प्रायः एक सप्ताह रहूँगा और वहाँ से ऋषिकेश घूमने जाऊँगा। उस व्यक्ति ने यह भाँप लिया था कि ये कोई बड़े रईस सेठ हैं अतः उसने कहा 'सेठजी, मैं गवैया हूँ और आपको अपना संगीत सुनाना चाहता हूँ। आप मुझे धर्मशाला का पूरा पता दें और समय बता दें तो मैं आकर आपका मनोरंजन करूँ।' पिताजी ने उसे एक प्रसिद्ध धर्मशाला का पता दे दिया और रात में आठ बजे आने का निमंत्रण दे दिया। किसी प्रकार वे उससे पीछा छुड़ाना चाहते थे। हरिद्वार पहुँचते ही बस से उतर कर पिताजी सीधे रेलवे स्टेशन जा पहुँचे और दिल्ली की टिकट कटा कर स्टेशन की दूसरी ओर भीड़ में जा मिले। गाड़ी के छूटने में प्रायः दो तीन घंटों की देर थी। उन्हें डर था कि हरिद्वार से दिल्ली जानेवाली ट्रेन में जरूर उनकी खोज हो रही होगी अतः वे गाड़ी छूटने के 10-15 मिनट पहले एक भीड़ भरे डिब्बे में भीतर घुसकर एक कोने में दुबक गये।

हरिद्वार से ट्रेन के रवाना होने पर उनकी जान में जान आयी पर खतरा तो अभी टला नहीं था। दिल्ली में भी राजा के कर्मचारी उन्हें झूठा-सच्चा आरोप लगाकर पकड़ सकते थे और टेहरी वापस ले जा सकते थे। दिल्ली में दिनभर शहर का चक्कर लगाने के बाद वे रात में वहाँ से कलकत्ता जानेवाली ट्रेन पर गया की टिकट कटा कर तीसरे दर्जे की भीड़ में जा बैठे। जब गाड़ी ने दिल्ली स्टेशन छोड़ा तभी उनकी जान-में-जान आयी और इस संकट से मुक्ति मिली।

कई महीनों के बाद गिरधारी से ही उनको पता लगा कि दो-तीन घंटों के बाद भी जब वे नहीं लौटे तो गेस्ट हाउस में खलबली मच गयी और राजा साहब को सूचना मिलने पर हरिद्वार और दिल्ली तक दूत दौड़ाये गये। पर चिड़िया हाथ से निकल चुकी थी। राजा साहब हाथ मलते रह गये।

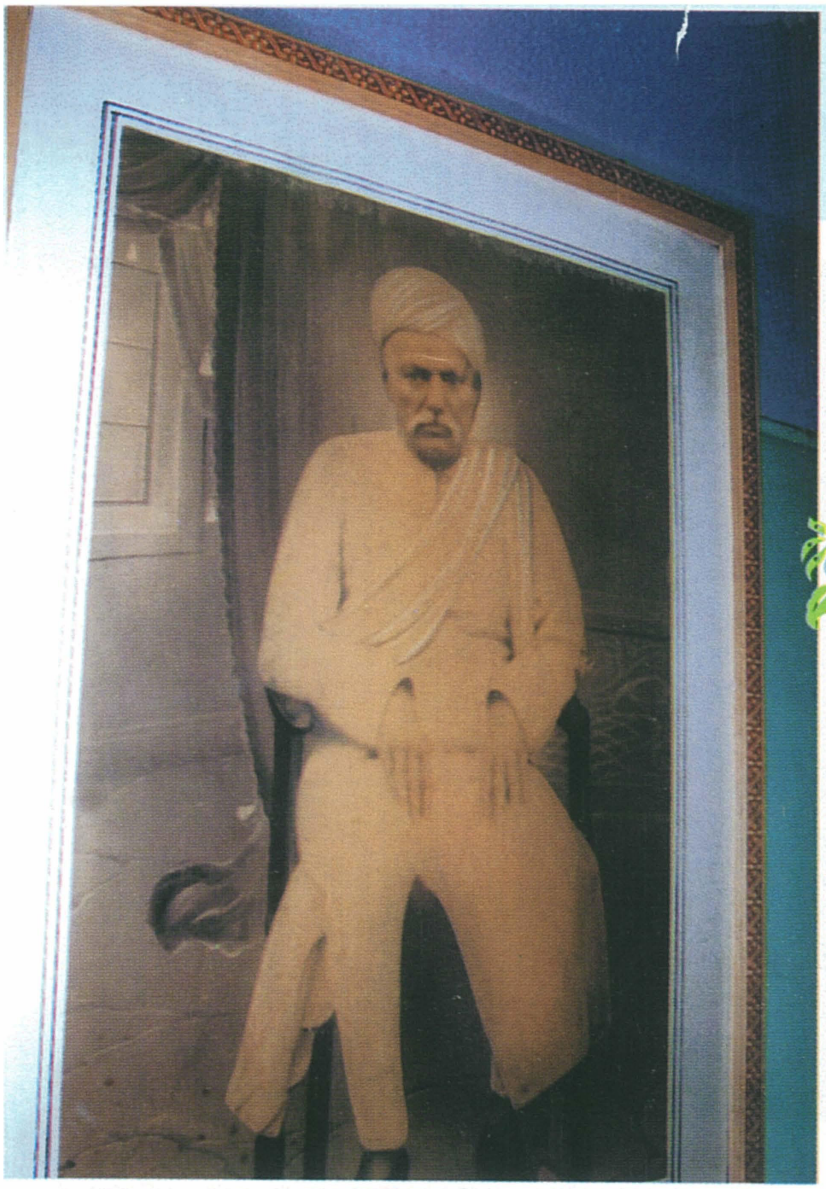

मुझे गोद
लेनेवाले
ताऊजी
रायसाहब
सूरजमलजी

गोद लेनेवाली माता श्रीमती मुहरी देवी

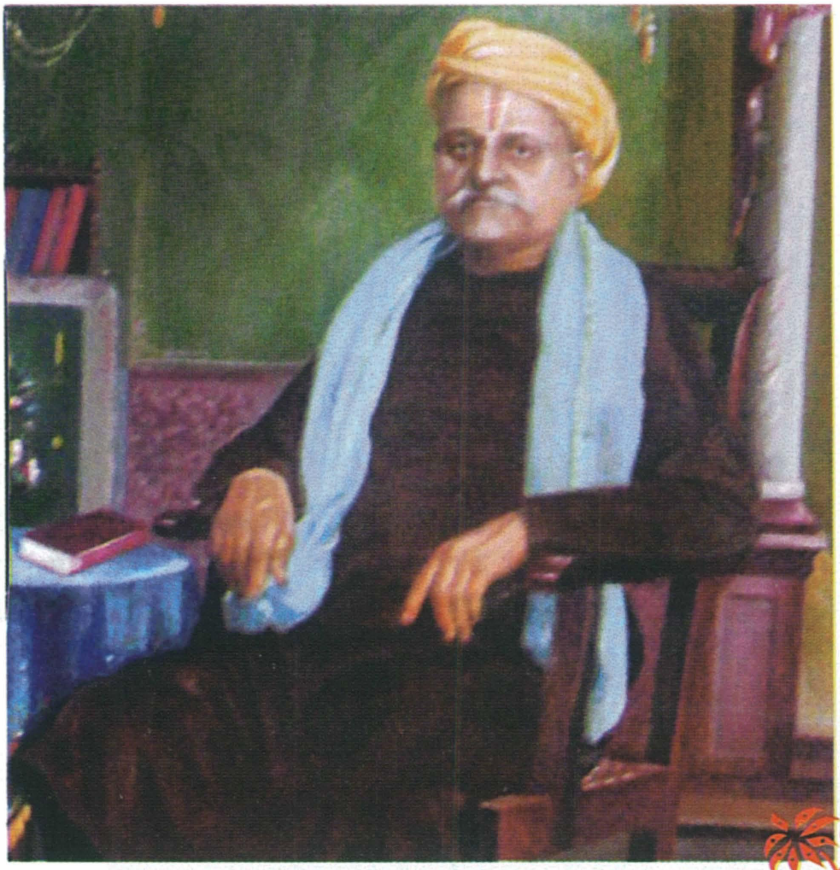

ताऊजी, गया प्रसादजी

जन्म देनेवाले पिता, शीतल प्रसादजी

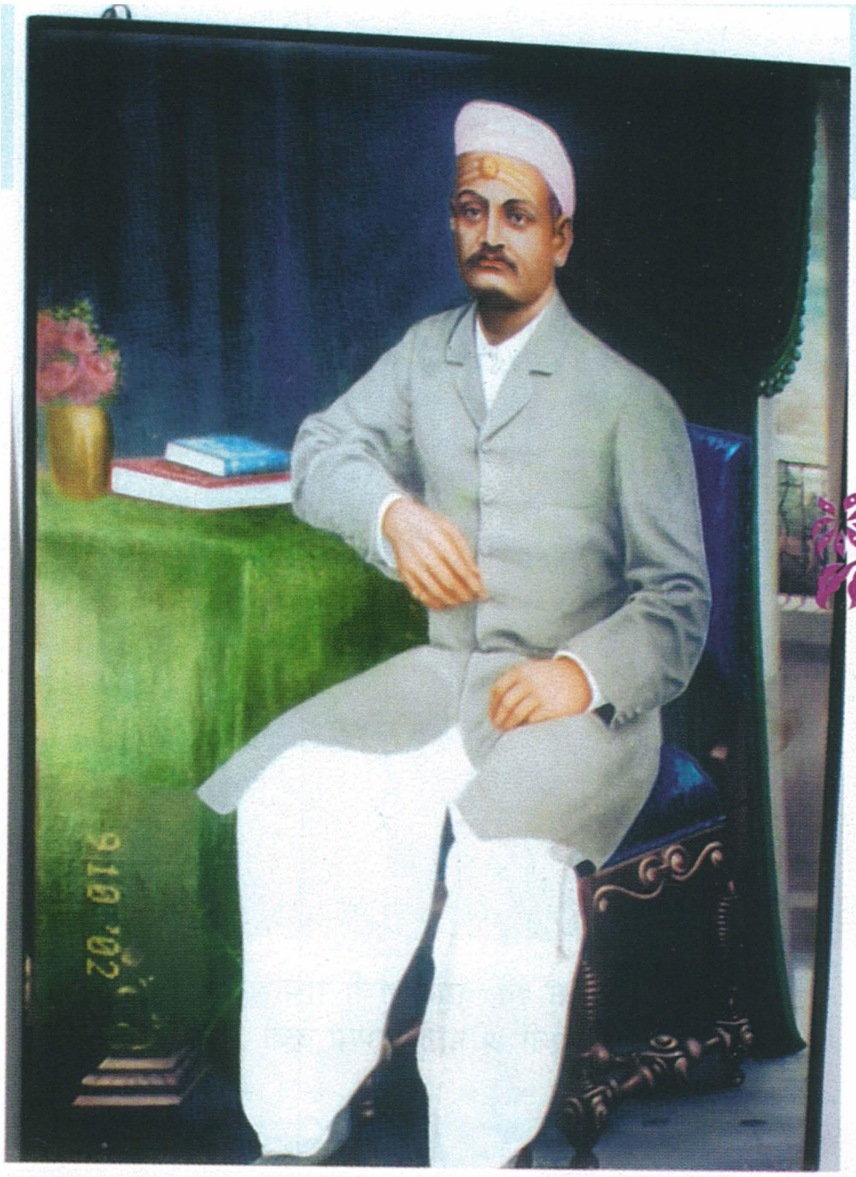

नानाजी,
मेघराजजी
रींगसिया

मामाजी, गजाधरजी रींगसिया

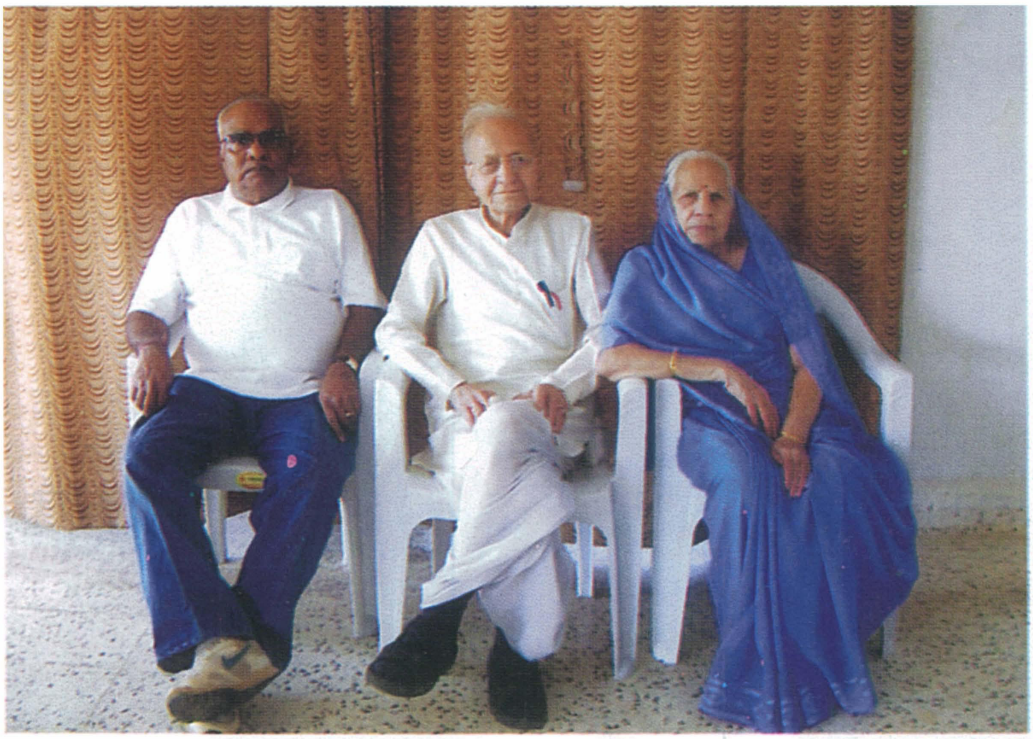

(बाएं से) ममेरे भ्राता श्री जगदीशजी रींगसिया,
गुलाबजी तथा पत्नी श्रीमती कृष्णा देवी

श्रीमती कृष्णा देवी
1943 का चित्र

श्रीमती श्यामा देवी
गुलाबजी की पत्नी की बड़ी बहन

विविध कालखंडों के मेरे चित्र

सन् 1941 में

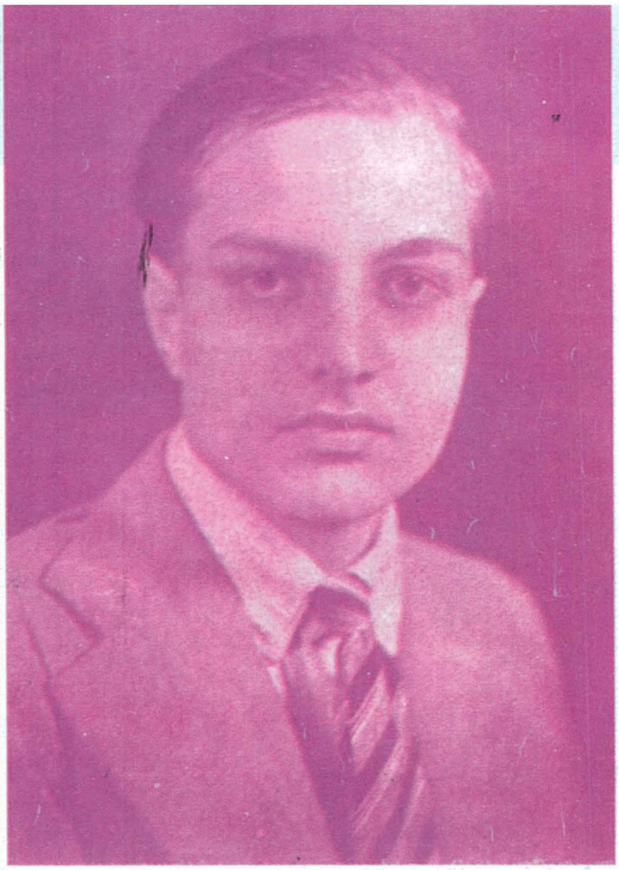

'कविता' पुस्तक में संलग्न
सन् 1941

'कच-देवयानी' में संलग्न
पुत्री शकुंतला को गोद में लिए
हुए, सन् 1946

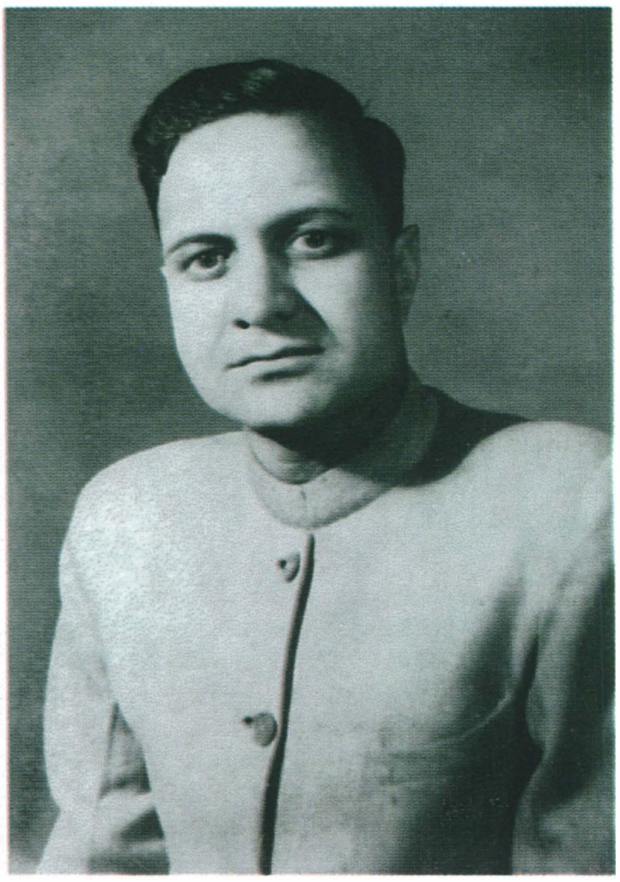

'उषा महाकाव्य' में संलग्न
सन् 1964

'रूप की धूप' में संलग्न
सन् 1966

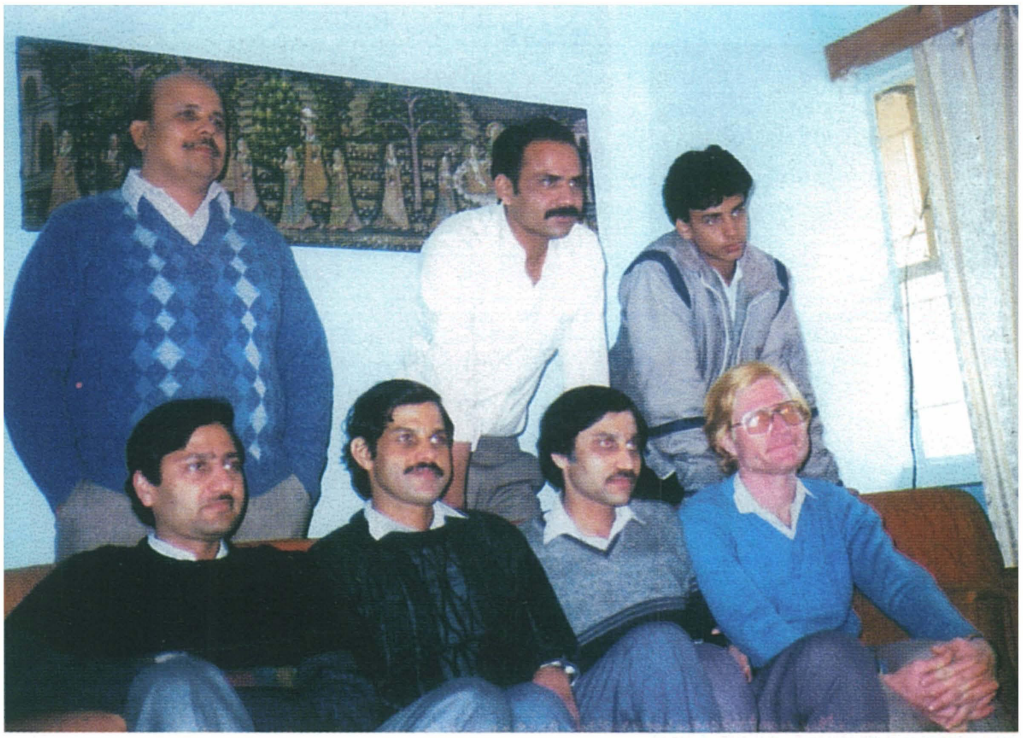

(बैठे हुए ज्येष्ठता के क्रमानुसार बाएं से) पुत्र डा. आनंदवर्धन, कमलनयन अशोक कुमार, शरत चंद्र। पीछे खड़े हुए (बाएं से) गुलाबजी के ज्येष्ठ जामात श्री जुगल किशोरजी खंडेलवाल, कनिष्ठ जामाता श्री अविनाशजी झालानी तथ दौहित्र श्री मनमोहन खंडेलवाल।

(बाएं से दायें) दौहित्रियां : मुक्ता झालानी, दिव्या झालानी।
पौत्रियां : नेहा खंडेलवाल, नूपुर खंडेलवाल, अंकुर खंडेलवाल

गुलाबजी का अमेरिका-स्थित परिवार सन् 2002
(ऊपर से-बाएं से दाएं)
प्रथम पंक्ति : अविनाश झालानी (छोटे जामाता), मनमोहन (दौहित्र), मुक्ता, प्रीति (दौहित्रियां), हर्षवर्धन, पराग (पौत्र), अशोक कुमार (तृतीय पुत्र)।
दूसरी पंक्ति : डा. विवेक (दौहित्र), नेहा (पौत्री), दिव्या (दौहित्री), अलका (तृतीय पुत्र अशोक कुमार की पत्नी)
तृतीय पंक्ति : डा. शोभा (डा. आनंदवर्धन की पत्नी), प्रतिभा (ज्येष्ठ पुत्री), कृष्णा देवी (पत्नी), गुलाबजी स्वयं, विभा (कनिष्ठ पुत्री), डा. आनंदवर्धन (ज्येष्ठ पुत्र), नूपुर (पौत्री)
चतुर्थ पंक्ति : अपूर्व, सिद्धार्थ (पौत्र), अंकुर, प्रज्ञा, डा. आभा (पौत्रियां), अरुण (आभा के पति)